स्वर संतुलन से रोगोपचार

Dr. C.M. Chordia
Consultant for Various Effective Drugless Self Curing Therapies for Treatment of Chronic & Acute Diseases

नासिका द्वारा श्वास अन्दर जाने और बाहर निकलते समय जो अव्यक्त ध्वनि होती है, उसे भी स्वर कहते हैं। जन्म से मृत्यु तक हमारे श्वसन की क्रिया निरन्तर चलती रहती है। यह क्रिया दोनों नथूनों से एक ही समय में समान रूप से प्रायः नहीं होती। श्वास कभी बायें नथुने से, तो कभी दायें नथुने से चलता है। कभी-कभी थोड़े समय के लिए दोनों नथुने से समान रूप से चलता है। बायें नथूने में श्वास की प्रक्रिया होती है तो उसे चन्द्र स्वर का चलना, दायें नथूने में जब श्वास की प्रक्रिया मुख्य होती है तो उसे सूर्य स्वर का चलना तथा जब श्वास दोनों नथूने में समान रूप से चलता है तो उस अवस्था को सुषुम्ना स्वर का चलना कहते हैं।

चन्द्र स्वर शरीर में ठण्डक तथा सूर्य स्वर शरीर में गर्मी बढ़ाता है। अतः गर्मी सम्बन्धी रोगों के अन्दर जैसे- गर्मी, प्यास, बुखार पीत्त आदि रोगों में चन्द्र स्वर चलाने से शरीर में शीतलता बढ़ती है, जिससे गर्मी से उत्पन्न असंतुलन दूर हो जाता है।

इसी तरह कफ सम्बन्धी रोगों के अन्दर जैसे- सर्दी, जुकाम, खांसी, दमा आदि में सूर्य स्वर अधिकाधिक चलाने से शरीर में गर्मी बढ़ती है। सर्दी का प्रभाव दूर होता है।

आकस्मिक रोगों में जब रोग का कारण समझ में न आये और चिकित्सक उपलब्ध न हो, रोग की स्थिति में जो स्वर चल रहा है, उसको बन्द कर विपरीत स्वर चलाने से तुरन्त राहत मिलती है।

मानव शरीर में स्वरोदय एक ऐसी आश्चर्यजनक, सरल, स्वावलम्बी, प्रभावशाली, बिना किसी खर्च वाली चमत्कारी उपचार प्रणाली होती है, जिससे असाध्य से असाध्य किसी भी रोग में तुरन्त राहत प्राप्त की जा सकती है।

- डॉ. चंचलमल चोरडिया
चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर,
थार हैण्डलुम के सामने, गोल बिल्ड़िग रोड़, जोधपुर-342003 (राज.)
(फोन) : 0291-2621454,2632267(घर), 2435471 (फैक्स),094141-34606(मोबाइल)
E-Mail : cmchordia.jodhpur@gmail.com
swachikitsa@therapist.net
(नोट :- परामर्श हेतु फोन पर सम्पर्क करें)